प्रमाण पत्र

मै यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री.दीपककुमार चितीवर फसाले ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध " डॉ. शंकर शेष के हिन्दी नाटकमें चित्रित समस्याएँ ", मेरे निर्देशनमें सफलतापूर्वक पूर्ण परिश्रम के साथ पूरा किया है। प्रस्तुत शोधकार्य के बारेमें मै पूरी तरहसे संतुष्ट हूँ।

(डॉ.व्ही.व्ही.द्रविड)
निर्देशक

कोल्हापुर।
दिनांक २८-११-९२।

आमुख

"डॉ.शंकर शेष के "फन्दी" नाटक में चित्रित समस्याएँ" विषय को मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध के लिए क्यों चुना ? इसका कारण यह है कि मैंने छात्र जीवनमें बी.ए.भाग-३ के पाठ्यक्रम में फन्दी नाटक का विशेष अध्ययन किया था। इस नाटक ने मुझे बहुतही प्रभावित किया था। एम.ए. करने के उपरान्त जब मैंने एम.फिल. में प्रवेश लिया, तब मैंने उपर्युक्त विषयको विशेष अध्ययन के लिए चुना। इस विषयको अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने निम्न लिखित अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक है — "डॉ.शंकरशेष के नाट्य साहित्य का परिचय" इस अध्याय में डॉ.शंकर शेष की संक्षिप्त जीवन रेखा का परिचय दिया है। बादमें हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास का संक्षेपमें परिचय देकर डॉ.शंकर शेष के प्राप्त नाटकोंका संक्षेपमें विवेचन किया है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है "हिन्दी के समस्यामूलक नाटकोंकी रूपरेखा" इस अध्यायमें पाश्चात्य समस्या नाटकोंका संक्षेपमें परिचय दिया है। बादमें हिन्दी के समस्यामूलक नाटकोंका विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है "फन्दी का नाट्यशिल्प" इस अध्याय में मैंने फन्दी नाटक का शिल्पगत अध्ययन किया है। इसमें फन्दी नाटककी कथावस्तु पात्र तथा चरित्र-चित्रण कथोपकथन, देश, काल, वातावरण, भाषाशैली, उद्देश्य पर विस्तारसे विवेचन किया है। इसके साथ अभिनेयता और मंचीयता की दृष्टिसे फन्दी नाटकका विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है "फन्दी" में चित्रित समस्याएँ" यह अध्याय मेरे लघु शोध-प्रबन्ध का महत्वपूर्ण अध्याय है। इस अध्यायमें शंकर शेष के फन्दी नाटकमें जिन समस्याओंका चित्रण किया हुआ/मिलता है। उनपर विस्तारसे विवेचन किया है।

अध्ययन की सुविधा के लिए इन समस्याओंको दो भागोमें विभाजित करके उनका विवेचन किया है।

प्रधान समस्याएँ

१) मौत के अधिकारकी समस्या
२) अर्थ की समस्या
३) असाध्य बीमारी की समस्या
४) शोषण की समस्या
५) ईमानदार डॉक्टरोंका अभाव
६) बेरोजगारीकी समस्या

गौण समस्याएँ

१) सदाचारी व्यक्ति के उद्धार की समस्या
२) व्यसन की समस्या
३) महँगाई की समस्या
४) सरकारी अस्पतालमें भ्रष्टाचार की समस्या।

पंचम अध्याय उपसंहार का है। विवेचित अध्यायों के निष्कर्ष संक्षेपमें उपसंहारमें लिख दिये है।

इस कार्य को संपन्न बनानेमें जिन विद्वानों, लेखकों, समीक्षकों तथा ग्रंथालयोंने मेरी मदद की है। उन सबके प्रती आभार प्रकट करना मेरा कर्तव्य है।

यह कार्य गुरुवर्य डॉ.व्यं.वि.द्रविड़ जी के मार्गदर्शनका ही फल है। उनके मार्गदर्शन के अभावमें इस कार्य के संपन्न होने की कल्पना नहीं की जा सकती थी। आपके ज्ञान एवं आपकी विद्वत्ता का मैं पूरा लाभ तो उठा नहीं पाया। क्योंकि आपके पास इतना ज्ञानसागर है कि जिसका अनुमान लगाने के लिए मैं अक्षम हूँ आपके ज्ञानसागरसे केवल मैं अपने लघु शोध प्रबन्ध की गगरी ही भर सका हूँ। मैं आपका आभार शब्दोंमें नहीं प्रकट कर सकता।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरे परमस्नेही मित्र प्रा.डॉ.अर्जुन चव्हाण जी

(अधिव्याख्याता कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज,इस्लामपुर) का महत्त्वपूर्ण योगदान है। जिन्होंने मुझे समय समयपर बल देकर प्रोत्साहित किया। आपकी वजहसे मेरा कार्य सरल हो गया इसलिए मैं आपका हृदयसे आभारी हूँ। इसीके साथ प्रा.डॉ.एम.एस.हसमनीस जी (अध्यक्ष हिन्दी विभाग ,विश्वासराव नाईक महाविद्यालय, शिराळा) ने इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरी काफी मदद की है। इसलिए आपके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना फर्ज मानता हूँ।

जिस संस्थाके कॉलेजमें मैं कार्यरत हूँ उस संस्था के पदाधिकारी ,कर्मचारी, कॉलेज के प्राचार्य आर.डी.राडे, मेरे गुरुवर्य प्रा.डॉ.बी.एस.जाधव,प्रा.व्ही.डी. सुर्वे और मेरे सहयोगी प्राध्यापकोंने मुझे इस कार्य को संपन्न बनानेमें प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपसे सहयोग दिया है इसलिए मैं उन सबका आभार प्रकट करता हूँ। अंतमें उन लेखकों एवं समीक्षाकोंका मैं हृदयसे शुक्रगुजार हूँ जिनके पुस्तकोंसे मुझे इस कार्य को संपन्न बनानेमें काफी मदद हुयी है। अपने परिवारवालों का आभार प्रकट करना तो उचित नहीं हो सकता परंतु उन सबके सहयोग के बिना यह कार्य कैसे पुरा कर पाता ?

अंत में लघुशोध प्रबन्धको अत्यंत कम समयमें सुचारु रूपसे टंकित करने का श्रेय श्रीयुत बी.आर.सावंत का है। अतःएव उनका भी मैं आभारी हूँ। अंतमें उन सबका आभार प्रकट करता हूँ जिनके प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपसे मिले सहयोगसे यह कार्य संपन्न हुआ है।

दिनांक :२४:११: :१९९२।

(श्री.दीपककुमार चिंतोबर फसाले)
शोध छात्र

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ क्रमांक
	आमुख	
प्रथम अध्याय -	डॉ.शंकर शेष जी के नाट्यसाहित्य का परिचय - सामान्य परिचय डॉ.शंकर शेष की जीवनी-व्यक्तित्व एवं कृतित्व - हिन्दी नाटक - उद्भव और विकास - भारतेंदुपूर्व युग - भारतेंदु युग - जयशंकर प्रसाद युग - प्रसादोत्तर युग - स्वातंत्र्योत्तर युग - डॉ.शंकर शेष के नाटकों का सामान्य परिचय।	1 26
द्वितीय अध्याय-	हिन्दी के समस्यामूलक नाटकों की रूपरेखा पाश्चात्य समस्या नाटक - हिन्दी में समस्या नाटक	27 – 46
तृतीय अध्याय -	फन्दी का नाट्यशिल्प कथावस्तु, शिल्प, पात्रपरिचय, संवाद(कथोपकथन) देश, काल वातावरण, भाषाशैली, अभिनय और रंगमंचीयता, उद्देश्य।	4[illegible] 79
चतुर्थ अध्याय -	फन्दी में चित्रित समस्याएँ प्रधान समस्याएँ-जीने के अधिकार की समस्या-अर्थ की समस्या - असाध्य बीमारी की समस्या-शोषण की समस्या- ईमानदार डॉक्टरों का अभाव-बेरोजगारी की समस्या। गौण समस्याएँ - सदाचारी व्यक्ति के उसूल की समस्या - व्यसन की समस्या-महँगाई की समस्या-अस्पतालों में भ्रष्टाचार की समस्या।	80 — 98
पंचम अध्याय -	उपसंहार	99 – 101
	संदर्भ ग्रंथ सूचि।	102 – 104